

सद्गतिः ॥

संगरु मिक्नहनिमित्त
वास्तुपञ्चमिखेनन
कलशाचननिमित्तार्थ

आशीषकवि

1822 I

ASIAN ARCHIVES

म३॥ ॥ वासुवलि विष्वा
निलातके ॥ कलंग पूजाया
॥ ॥ पू ३४ अंगुल १२ ॥ सिक्कि
लने मूल मालपू १ गवडा १ सउका
सने १ कसि नसाक पंचामृत
यात नवा मालका थूलि वैशुक विघनी

पुष्पकेशतया डामालको कर्मयाय ॥ ॥
नन वासुपूजयेत् ॥ ॥ पुष्पराजन ॥ ॥
जमान यथा कार्यनिमित्तक पुष्पराज
मि ॥ सिद्धि नमु ॥ ॥ सूर्याय ॥ ॥
य यथा कार्यनिमित्तक कलश
सूर्याय सुदनिमः ॥ ॐ शुक

सूर्याय सुदनिमः ॥ ॥
सकानयेत् ॥ जलपात्रपूजा ॥ अर्चयानुप
जा ॥ आत्मपूजा त्वयाय ॥ ॥ ॐ हस्तिन ॐ शुक
॥ चंदन ॥ सिद्धि ॥ यक्षपवीत ॥ पुष्पत्वं ॥ ॥
वेदावर्तन ॥ ॐ तत्त्वायानिष्ठादिसकलधनक
॥ ॥ विष्णुपूजा ॥ विघनीतस्वेति

कसगयाउलिपूजा ॥ पंचगव्यनहाय ॥ ईष
विषंक्ष ॥ ॥ अर्घ्यपोषनहा ॥ उंसुमिगियान ॥
असुमकन ॥ कलिसु ॥ ॥ काणगस ॥ उल्लज
विषदा ॥ रासिकनस ॥ उन्नकाहृदी ॥ ॥ वा
मुडवयपूजा ॥ उं ॐ मंजीवर्य ४ यनिद्रिदध
मयिभानूगदयवाञ्छथभत ॥ गतजीव

नद ४ पूनूचीनगनमृखंदधतांपर्वतः
॥ ॥ उं अनेयते ॥ गल ॥ गुप्तस ॥ वलिमालका
पूजा ॥ धूप दीप नैयद्य ॥ उं मनाहूति ॥
॥ ॥ वाक्कलपूजा ॥ भानिक ॥ पृष्टिक ॥
यथाकर्मकानयतू ॥ ॥ तस्यपूजायायथास
मालकाजाडाडा ॥ उं नसुलनस ॥ ॥ नासिया
रुद्रपूजायाडाडा ॥ कोरल ॥ नासिकालि ॥ कालज

अथ ॥ यजमानस्य यथाकार्यनिमित्तक वासु
पूजानिमित्तार्थं श्रीसूर्याय अर्घ्यं नमः ॥ ॐ श्री क
र्क ॥ ॥ जलपात्र अर्घ्यपात्रपूजा ॥ आत्मपूजा ॥
पुनःपूजा ॥ ॥ वासुवलि साधनं ॥ पंचगव्यन ॥
ॐ यद्विगुंष्ट ॥ अर्घ्यपात्रादकन मस्य कर्ण ॥ ॐ स
मिथियान ॥ ॥ नसाकन रुमि सहाय ॥ ॐ न

घघानां ॥ ॥ आसनतन ॥ पृथिवीमूर्त्य ॐ द
मासनं नमः ॥ पुष्पं नमः ॥ वाद्याद्यं नमः ॥ ॥
ध्यानं ॥ स्वर्णपीपे म दातृयां शुद्धानं कानरुषि
तां ॥ तनयां तां विधा वस्त्रां ध्यात्वा संपूजयन्महा
॥ ध्यानपूष्यं नमः ॥ ॥ सर्वदेवमया वासुपुन
र्षंगपूजयन्तु ॥ ॥ रुक्माद्यं चन्दन सिंदूरं

उमही शी विनि
ऊक्षापवीनक पूष्यनमः ॥ धूप दीप नैद्य
द्यादि ॥ ॥ नामैक नन गिया उर लिनन ॥ ॥
तामुया वसुतयाडा अर्घ्य विय ॥ ॥ अद्यादि ॥
यानूत्यामवेनि धृत्वा आगच्छ सर्व कल्यानि व
सुधलाक धा निधि रुद्रुता सिवना रुन स गोल
वन को न नाम गुप को न या म्य अ त्व दू दे गुरु

लक्ष्मी गृहाना र्घ्य मया द रुं प्रसन्ना गुरु दार
व ॥ ॐ गिरु मि अर्घ्य दत्वा ॥ वामुं पूजयन् ॥ ॥
कृष्णयुमानेन ॥ ॥ या सो दं गतये गुरु चका
नाति गृह गथा ॥ अग्निका म्म वगुः पति सि वि
धवा मुल कर्त्त ॥ ॥ अथ वामु पुनूष पूजामा
लरु ॥ ॥ आधान ग क य त्यादि ॥ ॥ क्षेन ॥

आकृष्टिगकनं वासु मूलानमसु नाकनि । स्मनत्पूजासु
 कृष्णादि निवेष्टा लब्धवानन ॥ जाननी कृष्यत्राणकै
 दिनि वागदूताभयो ॥ १ ॥ पादपूषे वाग्नां निना
 स्य हृदयजलि ॥ २ ॥ गिवाभुपूत्रषा वाग्नां वाग्नां वेदि
 कमतलायनं ॥ गिवादि कमतुं ॥ ३ ॥ नाकि कमतुं
 उं वाग्नां वाग्नां यनम ॥ ४ ॥ गि मरुन पं चाप वाग्नां सीप
 ३ वाग्नां पूषं नम ॥

॥ पायगादिवलिंदयाग ॥ ॥ गियाजलि ॥ ३ ॥
 उं क्रां किं क्रां वाग्नां पूत्रषा यनम ॥ ॥ उं गी क ॥
 यनम ॥ ॥ उं कनन गायनम ॥ ॥ उं गि मरुं यनम ॥
 उं सुष्मां यनम ॥ ॥ अंधा वाग्नां ॥ ॥ उं रुन सि रुमि
 नृस्यदिति न सि विन्ध वाग्नां विन्ध स्य उ वन स्य धः
 श्रीपथिवां यच पथिवां दृष्टं हृपथिवां श्रीहि

ॐ सी ४ ॥ ॐ महि श्री ४ ॥ ॐ पस्वाम् चामि वनू दस्यः
पासायनत्वा वडनास विनासु वास । सतस्य या नो
सुकुनस्य लोकसु रूपेणा दक्षामि ॥ ॐ गत्वा यामि
॥ ॐ मानस्माकं ॥ ॐ गृष विपुला श्रयया दवारि द्युत
य । ॐ य नूत विष्णु स्वाहा ॥ ॐ वाक्का कृतपतिजा
निर्धमान् स्वावे ॥ ॐ अन विवाहवान् ॥ यत्नम

रुपतिनन्ना इषस्य हान्न न द्विद्विपद संवतुष्यद
॥ ॐ वाक्का कृतपतिजा ॥ ॐ स्यात्ता धम । को महीननु
या गम्युम त्या आवह दमातय वा गित नन्ना यूयं पा
नस्य स्मिति ४ सदान् ४ ॥ ॐ अमी वहा वाक्का कृतपति
॥ नूपा न्ध विगन सं स्वासु संव या धिन ४ ॥ ॐ रु ॐ रु
रं ॥ ॐ वाक्का कृतपति ५ वा न्धि न्या अंग नु सो म्या नि ड

पूष्यपुत्रिरुक्तासम्पत्तिनामिन्द्रमूनीनांशुर्हंखापि
नि॥ ॥ धूप दीपादि ॥ स्नात ॥ वासुपूत्रूषनमस्तु
पु. रुसयातिनत ॥ यशा। मेरुदं धन धन्यादि. स
मद्वकूत्रसर्वदा ॥ ॥ श्वेत वासुपूत्रूषयजा ॥ ॥
धनवाकूत्रन. शसिकीलया. पालस. श्रीखद्युच
न. मधू. घृत दधि दूध थतनवूले ॥ ॥ अरुणधन

धूपशुभ ॥ नायूकायलन. हिनाडाआनयादिनकिल
साय ॥ नयायधुननाय ॥ ॥ उं विष्णु रुतलनागा.
लोकायालायकामदा। अग्निनाहोतिसुनु आय
विलकना ॥ सदा ॥ ॥ उं स्कंद जी दू साहा ॥ अग्निनेम
रा ॥ श्रीगणेश ॥ धनयमिमकीलसहि छाडा दक्षिण
यने. धकमगद। कनउलन. सकलेंक. कीलसहि

दाडा वायु वन धून के ॥ थयानाम डहन सा क
नवनादि ॥ ॥ ॐ नमः पश्चिम थयानाम डहन
कथं सत ॥ ॥ दुर्जन कथं सत ॥ मीयु च ॥ थयाना
धून दाडा अलयादि वलि विथ ॥ ॥ वलि मनु
॥ ॐ अग्नि रथा इध सर्व रथा यथा न्यतस्तमा शिना इव
लिं गत्य ॥ प्रयच्छ मि पृथग्मा दन मूलम ॥ १ ॥

ॐ नमः ताधि पति ल्येव नमः त्वां ऊच नाक सा वलि
गत्य ॥ प्रयच्छ मि सर्व गृह नु मन्दिता ॥ २ ॥ ॐ नमः
वायु नायु ना ऊच यथा न्यतस्तमा शिना वलि गत्य
प्रयच्छ मि गृह नु पुन्य भा दन ॥ ३ ॥ ॐ नमः
व सर्व रथा यथा न्यतस्तमा शिना वलि गत्य प्रय
च्छ मि गृह नु समनी च्छका ॥ ४ ॥ ॥ धूप दीप ॥

नेवाद्य ॥ साग ॥ लका ॥ काका ॥ सयूकं सर्वस्मिन्द
रूपिने । केका न न न निकं च सर्वसन्धिसमन्धि
न ॥ निर्मदरुलकंददि कृष्णाय नंदनव । वा
सुनूपमदे ॥ भानि । स्त्रीमसा मयुगकर्मणि ॥ ॥
थडा थडा का थास । थडा थडा । नेवाद्य नयाडा पूजा
याय ॥ ॐ छियाथे नमः ॥ ॐ ऊ । भावसे नमः ॥ ॐ

कान्नाथे नमः ॥ ॐ सुप्रियाथे नमः ॥ ॐ विमलाथे २ ॥
ॐ छिवाथे २ ॥ ॐ भालाथे २ ॥ ॐ रानूथे २ ॥ ॐ येनाथे २
॥ ॐ छिभगनमः ॥ ॐ धनयूवहावसूय ॥ ॥ ॐ धन्ये नमः
॥ ॐ धन्याथे २ ॥ ॐ विष्णुलाथे २ ॥ ॐ सिनाथे २ ॥ ॐ नूना
थे २ ॥ ॐ गजाथे २ ॥ ॐ निभाथे २ ॥ ॐ विदुमाथे २ ॥ ॐ वि
रुव २ ॥ वेद ॥ ॐ श्रीमालेखी ॥ ॐ धनोडरुनहाडासूय ॥

कृष्णनमः ॥ ॥ सहायनमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमाय ॥
ॐ कल्याणाय ॥ ॥ हृषीकेशायनमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमाय ॥
ॐ जगद्गणेशायनमः ॥ ॥ यामायायनमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमाय ॥
ॐ यक्षायनमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥
नमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमायनमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥
नमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमायनमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥

ॐ वितथायनमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमाय ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥
मर्द्धिषा ॥ ॥ विगतगमकना ॥ ॥ वक्रगनपूना ॥ ॥ ॐ नमः ॥
॥ ॐ नमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमायनमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥
मूर्द्धा ॥ ॥ यमायनमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमाय ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥
मनेदकं ॥ ॥ गंधर्वायनमः ॥ ॥ षष्ठांगधूमाय ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

ASHA ARCHIVES

आशा आर्काइव

1822

I

ॐ शुक्राय नमः ॥ एष सूना ॥ ॐ अनात्यनि ॥ ॥ कत
वनमः ॥ यमात्र ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ ॥ अनिश्चिना
यनमः ॥ एष यतमन्द ॥ ॐ अनादवी ॥ ॥ धर्तप
धिम ॥ ॥ दयूवाय नमः ॥ एष माता ॥ ॐ गव
वायू ॥ ॥ नागय नमः ॥ एष नागक ॥ ॐ आ
ॐ षवी ॥ ॥ वरुस्यतय नमः ॥ एष मृगसूय ॥

ॐ वरुहस्यत ॥ ॥ जकायनमः ॥ ॥ नमः ॥ ॐ
 कविदंग ॥ ॥ सामायनमः ॥ ॥ नमः ॥ ॐ
 त ॥ ॐ शुक्रं त्वं शुक्रं ॥ ॥ चिकित्सिकायनमः ॥
 नमः ॥ ॐ शाखधराय ॥ ॥ दिनेनमः ॥ ॐ
 लायि ॥ ॐ वेदाङ्गमर्त ॥ ॥ अदिनेनमः ॥ ॐ
 निका ॥ ॐ अदिनिर्ज्ञानदिति ॥ ॥ उरुनस ॥

ॐ आपायनमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ अस्मन्मता ॥
 आयवत्सायनमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ शोमालेखी ॥
 नमः ॥ ॐ मनीषयनमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ अ
 नमः ॥ ॐ सावित्रीनमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ
 शीघ्रत ॥ ॐ नमः ॥ ॐ विवस्वतेनमः ॥
 नमः ॥ ॐ देव्यावधूर्य ॥ ॐ दक्षिणाध ॥

[illegible]

ॐ स्कन्दाय नमः ॥ नमः कृष्णाय नमः नूयित्री ॥ ॐ नमः ॥
गवच ॥ ॥ अर्जुनाय नमः ॥ पूषाकाय नमः ॥ ॐ यान
नूयित्री ॥ ॥ जंरुकाय नमः ॥ नकमांस ॥ ॐ सश
जाता ॥ ॥ पित्रिपिच्छिकाय नमः ॥ नमः कौदनपू
ष्य ॥ ॐ वाममय ॥ ॥ पूर्वदि ॥ ॥ पूनर्वसू ॥ मृग
शिर ॥ आडा ॥ श्रुष्टा ॥ अनूनारा ॥ रुक्मा ॥ पूर्ववारा

॥ उरुनाषारा ॥ मूल ॥ अतदकिं ॥ ॥ असुनो
नमः ॥ रुद्रध्वज ॥ स्वास्ते ॥ विष्णुध्वज ॥ पूर्वरात्र
नमः ॥ उरुनरात्रनमः ॥ मद्यय ॥ पूर्वरुद्रय ॥
उरुनरुद्रय ॥ अतउरुने ॥ ॥ कलिकाय ॥
॥ नादिले ॥ पुनर्वसुवनमः ॥ विष्णुयनमः ॥ अ
श्वध्वज ॥ नवस्ते ॥ अतविष्णुय ॥ धनसुय ॥

॥ अवनार्यनमः ॥ अतमय ॥ ॥ वासुवाक्षमया
दिवादसनासि ॥ अतनक्रमनपूजयत ॥ ॥
आवाहनादि ॥ धूप ॥ दीप ॥ नैवेद्य ॥ येति ॥ ॥
ॐ नमो ग ॥ अमूनसनसती ॥ ॥ जय ॥ ॐ ह्रीं किं
ह्रीं वासुपूनषाय स्वाहा ॥ १० ॥ ॥ स्वा ॥ वासुपूनषन
मस्तु रुसर्पादिनगयरा ॥ गच्छ हं धनधान्यादिः ॥

समृद्धिं कुरु सर्वदा ॥ अङ्गनादि ॥ ॥ गङ्गा
टिका मा कृपय तस्मिन्नारु गते त्रिदिश दत्तनमस्तु
ससेतु ॥ सागना पथि यथावा रुसिद्धिनि ॥ तथा मा
वा रुक न्या न सम्यस्तु निति ॥ सह ॥ दक्षिण ॥ ॥
धनं पूजनं वलिना धूक ॥ ॥ हामयागसाधनं
वानथियक ॥ उमना हूति ॥ प्रतिष्ठा ॥ ॥ धनवा

या लान १

ला पूजायाय ॥ कृपयाय ॥ दमासर्जनम ॥ ॥ थुक्
धनमा लका पूजाया ॥ दक्षिणं कूलवां लडा क्ला
विय ॥ ॥ धनमुति ॥ कृजानं स्वर्गु नूपत्वं रुमो सुख
न कर्मनि ॥ विस्वकर्माय धनित्यं नमामुत्रागमूरुय
॥ अङ्गनादि ॥ ॥ धनसर्वला शलवाडा शुद्धानक
य ॥ मुति ॥ कृक दाने दययकोपि कीलकादि ॥

तेनपि। इमं गेयं धिर्वीदेवी, शिवस्त्राय न दत्तव ॥
वाक्प्रधान, सस्त्रिवाचनं य ॥ ७७ ॥ ॥ बालकया उ
वा, रिठ, मरिठ स्याडा ॥ मालसा, भक्तिशाय ॥ ॥
धवावलि सगयाडा, द्वासस, उभगकलकाय ॥ ॥
उद्यालकया अस कस्त्रिनलय ॥ नायकापननना
कयूसंगतय ॥ ॥ विधि (थंज) मूल ॥ कलभरि

षेक ॥ चन्दनादि, आशिर्वाद विय ॥ ॥ वासु
वाकवलि विसर्जनया दाडा, वृत्तिसवय कलका
य ॥ ॥ कलसवृत्त (ग) उरुमिस थूसंगत (थ) ॥ पद
द्विष्टया दाडा थडा कुडान ॥ ॥ निवासुयूजा वि
धिसमाफ ॥ ॥ ॐ ॥

ॐ वेदोक्तो दुःखप्रहरो मंत्रः १०८ ॥ यो मे मनु
यो बाजरायोत्प्रेभयं भीरवे मत्सु मा ह ॥ स्ते
नो वायो दिश्यति नो मृगो वात्सं तस्माद्वरुण
पात्यस्मात् ॥ ११ ॥







॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

۱۰۰
 ۱۰۱

מלך ישראל ויהוה אלהינו

卷之六

4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15

יהוה

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

द्वितीयः

可也

[illegible]

५५३३

मृदु

वायुव्य

५५३३

००॥५॥३॥

राजपुत्र

